. दू टा लघुकथा
****

. ठप्पा
"""""""""

मित्र लोकनि हमरा फरमाइशी लेखक कहै छला।
आबक नहि पता।
हम नहि चाहै छी जे एखनो से ठप्पा सटल रहय।
मुदा, अहाँ हुनक बातकेँ पुष्ट कैएक' छोड़बनि की?

किए?
"""""""""""

भगवान ने करथि-- ककरो कथा सुन' पड़य।
कथा ककरो कह' पड़य-- इहो नहि नीक लागत।
लिखिक' ककरो कथा कहब तँ आर अधलाह थिक।
तैयो, अहाँ कथे लिखब' चाहै छी यौ! किए?